10

जिया तुम चालो अपने देश...

जिया तुम चालो अपने देश, शिवपुर थारो शुभ थान
जिया तुम चालो अपने देश ।।

लख चौरासी में बहु भटके लह्यो न सुख को लेश ।।
जिया तुम चालो अपने देश ।।

मिथ्या रूप धरे बहु तेरे, भटके बहुत विदेश ।
जिया तुम चालो अपने देश ।।

विषयादिक से बहु दुःख पाये, भुगते बहुत कलेश ।
जिया तुम चालो अपने देश ।।

भयो तिर्यंच नारकी नर सुर, करि करि नाना भेष ।
जिया तुम चालो अपने देश ।।

'दौलतराम' तोड़ जग नाता, सुनो सुगुरु उपदेश ।
जिया तुम चालो अपने देश ।।

यहां कवि दौलतरामजी इस जीव को संबोधित कर रहे हैं कि हे जीव! तुम अपने स्वदेश चलो। तुम्हारा अपना शुभ देश अर्थात् शुभ स्थान तो शिवपुर (मोक्ष) ही है ।

यहाँ संसार में तो तुम चौरासी लाख योनियों में बहुत भटक चुके हो किन्तु तुम्हें लेश मात्र भी सुख की प्राप्ति नहीं हुई है, अतः अब तो तुम अपने स्वदेश अर्थात् शिवपुर चलो।

हे जीव! तुमने अनादिकाल से अनेक प्रकार के मिथ्यारूपों को धारण करके अन्य अनेक यौनियों में बहुत भ्रमण किया है तथा जहाँ तुमने निमित्त से अनन्त दुःख ही उठाये हैं अतः अब तुम अपने उत्तम देश शिवपुर को चलो।

कविवर पण्डित दौलतरामजी कहते हैं कि हे जीव! तुम इस संसार में अनेक प्रकार के वेश बना-बनाकर तिर्यंच, नारकी, मनुष्य और देव चर्तुगतियों में सब कुछ बन चुके हो, अतः अब तो इस असार संसार से सम्बन्ध तोड़ो और सद्गुरु के उपदेश को सुनो-समझो। हे जीव ! अब तो तुम अपने देश शिवपुर को चलो ।